पुरुषोत्तम दुबे

जुगाड़

ई-मेल:dubeypurushottam24@gmail.com

वह लकड़ी के कारोबारी समरथ सेठ की 'टाल' का चौकीदार होने के बावजूद ठंडी में चौकीदारी करते समय तापने के लिए कॉलोनी के खाली पड़े प्लॉटों में उग आए छोटे-बड़े पेड़ों से लकड़ी चुन रहा था।

एक प्लॉट पर उसे प्लॉट के मालिक से वर्जना मिली, "क्यों बे, लकड़ियों की चोरी कर रहा है?"

वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था!

इसी बीच प्लॉट मालिक की पत्नी आकर बोली, "मैं जानती हूँ इसे, पीठे वाले समरथ सेठ का चौकीदार है, जो जलाऊ लकड़ी का कारोबार भी करता है। ठेके पर श्मशान में लकड़ियाँ भी पहुँचता है!"

आगे बात को जारी रखते हुए बोली, 'स्साले ने मुर्दों के लिए लकड़ियों का कारोबार खोल रखा है और जिंदा चौकीदार के लिये...?" यह कहते हुए पत्नी ने चौकीदार के हाथों से सञ्चित की हुई लकड़ियाँ झटके के साथ छीन लीं!

एक कोशिश ऐसी भी

पता ही नहीं चला कि कब सुलेखा टेबुल के समीप आकर खड़ी हो गईं। मैं सम्पूर्ण मनोयोग के साथ एक-एक शब्द स्वर्णाक्षर की तरह बना-बनाकर लैटर राइटिंग कर रहा था।

'यह क्या गोदा-गादी कर रहे हो ?' अपनी पत्थर फेंक आवाज़ में सुलेखा ने मेरी पत्र लिखने की एकाग्रता को त्वरित रूप में भँग करते हुए मानों टोंका-टाँकी के लहजे में मुझको कहा !

' देख नहीं रहीं हों ? मित्र सुरेश को पत्र लिख रहा हूँ।' मैंने अपनी गर्दन को नब्बे के कोण में घुमाते हुए सुलेखा की आँखों में अपनी आँखें पिरोते हुए जवाब दिया।

'स्मार्टफोन के ज़माने में पत्र ? क्या सोचेंगें सुरेश ? अरे दो टप्पी बात के लिये पत्र लिखने की बजाय मोबाइल कॉल ही कर लेता ?' अपनी अँगुली को नचाते हुए जैसे सुलेखा चेतावनी देते हुए आज के समय में पत्र लिखने की मेरी ज़रूरत पर आपत्ति उठाते हुए इतना सब एक साँस में कह गई थीं।

मैंने सुलेखा की बात का प्रतिकार करते हुए कहा , 'अरे, सुरेश को पत्र लिखने का तो एक बहाना है! असल में यह पत्र तो मैं सुरेश के पाँच वर्षीय बेटे ओजस के लिए लिख रहा हूँ। इस पत्र में मैंने यह लिख दिया है कि यह पत्र ओजस को ज़रूर दिखाना और हो सके तो उससे पढ़वाना भी। ताकि ओजस का ध्यान शब्दाक्षरों की बनावट पर केंद्रित हों। आज की पीढ़ी के हरूप बिगड़ते जा रहें हैं। ऐसे कई पत्र आगे भी सुरेश को लिखता रहूँगा। मैं चाहता हूँ कि हमारी भावी संतानों की लिखावट सुधरे।'

पति से इतना सुनकर सुलेखा आगे कुछ और बात को न बढ़ाते हुए अपने ही भीतर विचारों में खो गईं। उसे अपने स्कूल के दिन याद हो आये जब उसकी भद्दी लिखावट पर उसकी शिक्षक उसको अक्सर डाँट पिलाती थीं।